JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

नरेन्द्र मोदी काल में भारतीय विदेष नीति के समक्ष चुनौतियाँ ‘भारत की पूर्व की ओर देखो नीति – ए रोड फॉर ग्लोबल पॉवर’

शोधार्थी
डॉ. दीपक रजने
पदमावती महाविद्यालय, पूंजी, चोपना

किसी भी राष्ट्र की विदेष नीति उसके नीति निर्माताओं द्वारा बनाई तथा लागू की जाती है। ऐसा करते समय वे राष्ट्रीय हितों का आन्तरिक तथा बाहरी वातावरण तथा राष्ट्रीय मूल्यों को ध्यान में रखते हैं। इनका विष्लेषण करते समय उनकी अपनी धारणाएं तथा अपने अधिमान होते हैं। जो तत्व विदेष नीति के निर्धारक तत्व कहा जाता है। किसी अन्य राष्ट्र की विदेष नीति की भांति भारतीय विदेष नीति भी कई कारकों अथवा तत्वों और घटकों द्वारा निर्धारित है। जिसमें सर्वप्रथम तत्व उसका भूगोल है।

‘‘पूर्व की ओर देखो’’ नीति भारत द्वारा द.पू. एषिया के देषों के साथ बड़े पैमाने पर आर्थिक और सामरिक संबंधों को विस्तार देने, भारत को एक क्षेत्रीय शक्ति के रूप में स्थापित करने और इस इलाके में चीन के प्रभाव को संतुलित करने के उद्देष्य से बनाई गई नीति है। वर्ष **1991** में **नरसिंह राव** सरकार तथा **मनमोहनसिंह** सरकार द्वारा शूरू की गयी इस नीति के साथ ही भारत के विदेष नीति के परिपेक्ष्यों में एक नई दिषा और नए अवसरों के रूप में देखा गया और **वाजपेयी** सरकार तथा **मनमोहन** सरकार ने भी इसे अपने कार्यकाल में लागू किया।[1]

भारतीय विदेष नीति में **1990** के दषक में नया मोड़ आया इससे पहले **नेहरू** की नीति का ही अनुकरण किया, आर्थिक व्यवस्था में भी बदलाव आया था। जब **नरसिम्हाराव** प्रधानमंत्री थे उनकी सरकार में **मनमोहन सिंह वित्त मंत्री** थे उन्होंने विदेषी कम्पनियों को व्यापार के लिए आमत्रंण दिया गया जिससे आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ। इस दषक में यह कहा जाने लगा कि आगे पूंजीवादी व्यवस्था का वर्चस्व ही रहेगा। यही समय था जब भारत में भी आर्थिक और सामरिक शक्तियों का विकास हो रहा था। ‘‘**पूर्व की ओर देखो**’’ की नीति का अनुकरण किया जाने लगा। पड़ोसी देष –**इण्डोनेसिया, फिलिपिन, थाइलैण्ड**

आदि। इसके पीछे वैचारिक मत यह था कि यूरोपीय देषों की असफलता के लिए सेलरी देना भी दुसवार हो गया था, तब अमेरिका कि स्थिति मजबूत थी। **अमेरिका, चीन** और **भारत** धीरे– धीरे बड़ी आर्थिक शक्ति के रूप में उभरने लगा। **अमेरिका, ईराक** तथा **अफगानिस्तान** पर हस्ताक्षेप के कारण आर्थिक स्थिति में गिरावट आयी।

चुनौतियाँ– आतंकवाद, अलगाववाद, माओवाद तथा आर्थिक स्थिति को नकारा नहीं जा सकता, साथ ही बहुध्रुवीय होती विष्व व्यवस्था, असुरक्षा और रणनीतिकि चिंता तथा पड़ोसी देषों के साथ सीमा विवाद आदि। जिस प्रकार नेहरू प्रधानमंत्री थे तब उन्होंने विदेष मंत्रालय अपने पास ही रखा। वैसे मोदी को भी चाहिए था कि वे विदेष मंत्रालय का स्वतन्त्र प्रभार संभाले।

भारतीय विदेष नीति के भाग्य विधाता व निर्माता के रूप में **पं. जवाहर लाल नेहरू** का नाम अग्रणी है। विदेष नीति किसी भी पड़ोसी देष से अपने देष के व्यवहार तथा सम्बन्धों पर आधारित होती है। विपरीत परिस्थितियों के पश्चात् भारत के प्रधानमंत्री **नरेन्द्र मोदी** ने भारतीय विदेष नीति को नया मोड़ दिया। जिसमें उन्होंने भारतीय व्यापार और उद्योगों को बढ़ावा देने हेतु **'मेक इन इण्डिया'** कैम्पेन चलाया। **2014** में आई भाजपा की सरकार में रहते अब तक 14 बार विदेषी यात्राएं कि जिसमें कुछ राष्ट्रों में दो बार भी जाना पड़ा और वहां के उद्यामियों से मुलाकत की जिसका उद्देष्य भारत में रोजगार के सुअवसर को लाना था। उनके इन दौरे पर कभी प्रष्न चिन्ह् व आरोप लगाया जाता रहा है।

नवम्बर, 2014 में, म्यांमार में **भारत – आसियान षिखर बैठक** एवं पूर्वी षिखर बैठक में प्रधानमंत्री जी ने रेखांकित किया कि उनकी सरकार भारत की अब तक की **'पूरब की ओर देखो नीति'** को **'पूरब में काम करो नीति'** में परिवर्तित करने के लिए पूरी प्राथमिकता एवं गति के साथ अग्रसर हुई है। उन्होंने भारत की पूरब में काम करो नीति के केन्द्र में आसियान को रखा तथा एषियाई शताब्दी के हमारे सपने का इसे केन्द्र बताया तथा कहा युवा संस्था परन्तु पुरानी सभ्यता के रूप में भारत और आसियान महान साझेदार हैं।[2]

किन्तु वे भलि–भाति परिचित थे कि किसी भी देष की विदेष नीति को समझने के लिए विषेषतौर पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध पर ध्यान इतिहास, समाजषास्त्र, समाजषास्त्री अध्ययन, भौगोलिक परिस्थिति के साथ मनोविज्ञान पर ध्यान देना उचित होगा तथा अर्थषास्त्र को नकारा नहीं जा सकता है। भारतीय विदेष नीति पर चर्चा करने के पूर्व भारतीय इतिहास तथा विष्व इतिहास को समझना आवष्यक होगा। **यथार्थवादी विचारधारा** के प्रवर्तक **हॉब्स** 'मनुष्य को स्वार्थी होना बताते हैं।' वही ऐसी परिस्थिति में **सामाजिक अनुबन्ध** की आवष्यकता पड़ती है जिसके प्रतिपादक **लॉक** थे। जिसमें सषक्त अनुबन्ध तथा दण्ड का प्रावधान किया। जिसके पश्चात् आर्दषवादी विचारधारा का प्रसार हुआ और निर्णयन सिद्धान्त का

अस्तित्व सामने आया। **रूसो** ने **आर्दषवादी विचारधारा** का पक्ष प्रस्तुत किया तथा **मार्क्स** का क्रांतिकारी चिन्तन 20वीं सदी में जुड़ा।

प्रमुख शब्द – विचारधारा, नेतृत्व, भूमिका, गुटनिरपेक्षता, तथा क्षमता।

'पूर्व की ओर देखो नीति' भारत में 90 के दषक में प्रारम्भ हुई जिसमें भारत ने पूर्वी तथा दक्षिण–पूर्वी पड़ोसी देषों के साथ आर्थिक सम्बन्धों पर विषेष जोर दिया। जिसका उद्देष्य भारत तथा उसके पड़ोसी देषों के बीच सांस्कृतिक, व्यापारिक और वाणिज्यि सम्बन्ध मजबुत हो सके। कहा जा सकता है कि **'पूर्व की ओर देखो नीति'** मुख्यतः आर्थिक दृष्टिकोणों को ध्यान में रखकर बनाई गई एक नीति थी लेकिन समय के साथ इसमें तमाम कूटनीतिक तथा सामरिक विचारधाराओं का भी सम्मिश्रण होता गया और आज **''पूर्व की ओर देखो नीति''** भारत की विदेष नीति का एक बहुमुखी व सफल हथियार है।[3]

सन **1991** में तत्कालीन प्रधान मंत्री **पी.वी. नरसिम्हा राव** के समक्ष भारत में आर्थिक संकट का दौर था तभी उन्होंने भारत को आर्थिक संकट से उभारने के लिए विदेषी निवेष के द्वार को खोला गया। इसके बाद प्रधानमंत्री **आई. के. गुजराल, अटल बिहारी वाजपेयी** और **डॉ. मनमोहन सिंह** ने इस नीति को आगे बढ़ाया। यह भारत की विदेष नीति का अंग बन गई और वर्तमान समय में **नरेन्द्र मोदी** द्वारा इसे नई दिषा देने का काम किया जा रहा है। वे अर्थव्यवस्था का उदारीकरण, लाइसेंस प्रणाली को आसान तथा पारदर्षी बनाना तथा विदेषी निवेषकों को भारत में आमंत्रित किया।

सिंगापुर की अपनी यात्रा के दौरान, भारत की विदेष मंत्री द्वारा कहा गया कि हमें **''एक्ट ईस्ट पॉलिसी''** की आवष्यकता है। अब **''लुक ईस्ट पर्याप्त नहीं है, अब हमें ''एक्ट ईस्ट पॉलिसी की जरूरत है।**[4]

नरेन्द्र मोदी के समक्ष देष की जो समस्याऍ थी उन्हें समझा और भारतीय विदेषनीति को नया मापदण्ड दिया। वे भारतीय राष्ट्रीय हित के लिए **विचाराधारा** को महत्वपूर्ण मानते हैं। उनके सामने समसामयिक सुरक्षा, त्वरित आर्थिक विकास तथा जम्मू कष्मीर आदि समस्याओं ने प्रष्न चिह्न खड़ा किया साथ ही चीन सीमा विवाद प्रमूख रहा।

विचारधारा के माध्यम से शीतयुद्ध जैसी समस्याओं के जन्म लिया। भारत के पड़ोसी देष चीन व पाकिस्तान से लगातार भारत पर हमला करते रहे। इसी कारण इन राष्ट्र के बीच वैचारिक मतभेद होना शुरू हुआ।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर राज्यों के बीच असुरक्षा की भावना सदैव बनी रहती है। कौटिल्य ने अपनी पुस्तक 'अर्थषास्त्र' तथा मैकियावेली ने अपनी पुस्तक 'द प्रिंस' में इस तथ्य की तरफ इषारा करते हुए लिखा है कि किसी भी राज्य के लिये पड़ोसी राज्य सबसे खतरनाक साबित हो सकता है, अतः दो पड़ोसी राज्यों, विषेषतः जिनकी शक्तियों के बीच में प्रतियोगिता चलती रहती हो, में एक–दूसरे को लेकर परस्पर संघर्ष की स्थिति बनी रहती है।[5]

ऐसी विकराल परिस्थिति पर काबु पाने के लिए **मोदी** द्वारा ''एक्ट ईस्ट'' की नीति का प्रतिपादन किया और वे अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के छात्र होने के नाते कर्त्तव्य और दायित्वों को महत्व दिया। उन्होंने एक नवीन नीति निर्माण कि जिसमें **''पूर्व की ओर देखो नीति''** का दायरा व महत्व बढ़ाया। जहां 2015 में इस नीति में नये आयाम को सम्मिलित किया जिसमें संस्कृतिक सम्बन्धों को बढ़ावा देना, द्वपक्षीय क्षेत्रीय और बहुपक्षीय स्तर पर सतत मेल मिलाप के माध्यम से एषिया प्रांत क्षेत्रों के देषो के रणनीति सम्बन्धों को विकसित करना है। जिससे अरूणाचल प्रदेष सहित पूर्वी राज्यों को पड़ोसी देषो के साथ बेहतर कनेक्टिविटी प्रदान की जा सके तथा व्यापार को बढ़ावा मिले।

विदेष नीति–

इसके अन्तर्गत इनका शोध विभाग होता है तथा वरिष्ठ कार्यकर्ता सम्मिलित होते हैं साथ ही दुनिया के राजदूत का सम्पर्क बना रहता है।

1. **विदेष मंत्री**
2. **प्रधानमंत्री**
3. **संसद**
4. **समसामयिक संस्था तथा मीडिया जिनमें विदेषी प्रचार तंत्र भी होते हैं। जिसमें अलग–अलग देषों में अलग–अलग संस्थाएं होती है। जैसे– अमेरिकान थिंकटेन्क, काऊसिल ऑफ फॉरेन पालिसी प्राऊन इनट्यूषन तथा रेन कारप्रोरेषन।**

2. इग्लैण्ड– इनस्ट्यूषन फॉर स्ट्जिक, कामन वेल्थ ऑफयरस चेटम हाऊस।

3. भारत – इण्डियन कांउसिल ऑफ फारेन्स ऑफसेट जो सूप्रे ने बनाया था।

किसी भी अक्षांष या देषांतर पर स्थित देष प्रधानमंत्री **मोदी** की प्राथमिकता में शुमार देखे जा सकते हैं, इसकी एक वजह वैदेषिक नीति को कहीं अधिक पुख्ता करना है। इसी क्रम में बीते 21 नवम्बर से **मोदी** पूर्व के देषों की यात्रा पर थे। चार दिनी मलेषिया और सिंगापुर की यात्रा, भारत की **'पूर्व की**

ओर देखो नीति' को एक बार पुनः नयापन प्रदान करती है। प्रधानमंत्री की महत्वकांक्षी परियोजना **"मेक इन इण्डिया"** और **"स्मार्ट सिटी"** का संदर्भ मलेषिया में भी काफी प्रसार लेते हुए देखा गया।[6]

किसी भी देष की विदेष नीति उसके प्रधानमंत्री के नेतृत्व क्षमता पर प्रभाव डालता है। साथ ही आम जनता के जनमत को भी प्रभावित करती है। ज्यादातर विदेष नीति के बारे में आम लोगों का ध्यान कम ही जाता है, ध्यान तब जाता है जब सरहद पर जवानों पर हमला हो। **पं. जवाहर लाल नेहरू** की विदेष नीति में नैतिक तत्व मौजूद था। गैर कांग्रेसी सरकार बनी जिसमें **विदेष मंत्री अटलबिहारी वाजपेयी, इन्द्रकुमार गुजराल और स्वर्णसिंह** इन्होंने **भी नेहरू** की विदेष नीति का समर्थन ही किया और इसे आगे बढ़ाया। **मोरारजी देसाई** की सरकार में यही निरन्तरता बनी रही वहाँ भी **नेहरू** की **विदेष नीति** का अनुसरण किया। वही मोदी के कार्यकाल में भी देखा जा सकता है।

वर्ष **2014** में एक्ट ईस्ट पॉलिसी में भारत की सहभागिता महत्वपूर्ण थी, क्योंकि वह हमारी **"एक्ट ईस्ट"** पॉलिसी का ही भाग है। वर्ष **2014** में म्यांमार में हुए **12वें आसियान –भारत षिखर सम्मेलन** और **9वें पूर्वी एषियाई सम्मेलन** में **"एक्ट ईस्ट"** नीति का पदार्पण किया गया। इस नीति का प्रमूख उद्देष्य भारत सम्पूर्ण प्रषान्त महाद्वीप क्षेत्र में न केवल व्यापारिक सम्बन्ध बल्कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्धों का भी विकास करें।[7]

अन्तर्राष्ट्रीय परिवेष निरन्तर बदलते रहते हैं। नेताओं की भूमिका को लेकर सदैव चर्चा होती रहती है। जैसे–**रूजवेल्ट, चर्चिल** तथा **मोदी** जो अखबारों के पन्नों पर नयी तथा अलग प्रकार की विदेष नीति के कारण सुर्खियों में रहे। जिससे इन नेताओं की नेतृत्व क्षमता का पता चलता है अर्थात् यह कि देष के नेता भी विदेष नीति को प्रभावित करते हैं।

आसियान – भारत षिखर सम्मेलन वर्ष 2015 में **मोदी** ने आंतकवाद के बड़े खतरे से निपटने के लिए ब्लॉक के साथ सहयोग बढ़ाने का अह्वान किया। उन्होंने दक्षिण चीन सागर में क्षेत्रीय एवं नौवहन विवादों को शांतिपूर्ण माध्यमों से निपटाने की जरूरत को भी रेखांकित किया। भारत ने यह घोषणा की कि वह जल्द ही सभी आसियान देषों के लिए इलेक्ट्रॉनिक–वीजा की सुविधा को विस्तार देगा।[8]

2000 के बाद **चीन** की अर्थव्यवस्था की रफ्तार में बढोतरी हुई जो 10 प्रतिषत इकोनॉमी बढ़ोत्तरी थी। **ब्रिटिष अर्थषास्त्री** ने कहा कि यदि चीन इसी तरह बढ़ता रहा तो अमेरिका के काफी करीब आ जाएगा। भारत भी **जापान** की अर्थव्यवस्था से आगे निकल गया है। आर्थिक विकास में **अमेरिका** पहला और **चीन** दूसरा तथा **भारत** तीसरे नम्बर पर है 2001 तक की स्थिति थी।

जब चीन की बात आती है तो हमें सोचना होगा कि आर्थिक और सैन्य दृष्टि से भारत कमजोर है और मोदी कितने बड़े राष्ट्रवादी क्यों न हों और उन्होंने दूसरे दलों के नेताओं की इस बात को लेकर कितनी ही आलोचना की हो कि वे चीन के दुस्साहस को अनदेखा कर रहे हैं, लेकिन खुद मोदी भी पेइचिंग से लड़ाई मोल नहीं चाहेंगे। चीन को एक वैष्विक शक्ति उसकी आर्थिक ताकत के कारण माना जाता है और इस कारण से मोदी चाहेंगे कि भारतीय अर्थव्यवस्था मजबूत हो।[9] उन्होंने इसी कारण नोटबंदी की जिससे कालेधन पर काबु किया जा सके। किन्तु उसका प्रभाव कम दिखाई दिया और भारत की आर्थिक स्थिति में गिरावट आई।

मोदी अटल बिहारी वाजपेयी की 'लुक ईस्ट' नीति को एक कदम और आगे ले गए और इसे 'एक्ट ईस्ट' में बदल दिया। म्यांमार, वियतनाम, जापान, दक्षिण कोरिया, मंगोलिया के साथ मजबूत आर्थिक और सुरक्षा रिष्तों से लेकर प्रषांत महासागर के ऑस्ट्रेलिया, फिजी व हिन्द महासागर में मारीषस तक मोदी ने भारत की विदेष नीति को बार–बार रेखांकित करने की सफल कोषिष की।[10]

सारांश– विष्व समाज की गत्यात्मक शक्ति को देखकर आज कोई भी राष्ट्र अपने आपको अलग नहीं कर सकता, यही विष्व समता की वास्तविकता। जो राष्ट्र स्वतंत्र हुए है उनकी नीति एवं अन्र्तसम्बन्धों को प्रभावित करने वाले कारक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय हित का निर्धारण एवं तार्किक लक्ष्य की उपलब्धता के लिए अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का अध्ययन जरूरी है। पूर्व में अन्र्राष्ट्रीय राजनीति राज्यों के सम्बन्धों तक सीमित थी, किन्तु **21वीं** सदी के विष्व की जटिलताओं संप्रेषणषीलता और वास्ताविक अनिवार्यताओं के फलस्वरूप क्षेत्रीय राज्यों के निकट आ गई है जो संगठन पर जोर देता है।

वर्तमान समय में ऐसा कोई राष्ट्र नहीं है जिसकी नीतियां एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध हेतु संगठन से जुडा नहीं है, और कोई राष्ट्र पूर्णरूपेण आत्मनिर्भर है न ही हो सकता है इसके पीछे कारण बड़ा है क्योंकि कोई भी राष्ट्र जो उद्देष्य तथा राष्ट्रीय हित प्राप्त करना चाहते हैं। वह उनकी शक्ति से बड़ा होता है ऐसी स्थिति में विदेष नीति की आवष्यकता पड़ती है।

प्रधानमंत्री **नरेन्द्र मोदी** द्वारा विभिन्न राष्ट्रों के राष्ट्राध्यक्षों तथा उनके विदेष मंत्रीयों से मिलने की वजह साफ हो जाती है कि इसके पीछे उनकी क्या इच्छा थी। वे सामारिक भागीदारी के माध्यम से इंडोनेषिया, विनयनाम, मलेषिया, दक्षिण एषियों के देषों के साथ साथ एषिया प्रषांत के सभी देषो के साथ सामरिक भागीदारी से अपने सम्बन्ध को मजबूत करते नजर आये।

बिमस्टेक, एषिया सहयोग वार्ता, गंगा कोऑपरेषन तथा हिन्द महासागर रिम एषोसिएसन जैसे मंचो पर अपनी सक्रियता निभाई और हमारे घरेलू मूद्दों जैसे स्मार्ट सिटी, मेक इन इण्डिया, व्यापार कौषल,

शहरी नवीकरण तथा बुनियादी ढाँचा विनिर्माण पर विमर्ष किया। साथ ही नये आयामों का समावेष किया है राजनीति सुरक्षा, सामाजिक सांस्कृतिक मेल–मिलाप, आतंकवाद से मुकाबला, सीमा सुरक्षा व शांति और अर्न्तराष्ट्रीय कानून और मापदण्डों के साथ सामूहिक सुरक्षा पर बल दिया गया।

जब इन्द्रकुमार गुजराल प्रधानमंत्री थे तब उन्होंने कहा कि ''मैं समझता हूँ कि भारतीय विदेषनीति समय की कसौटी पर खरी उतरी है। दुनिया के तबरीबन सारे देष हमारी नीति की सरहना करते हैं, हमारी नीति में सहअस्तित्व की भावना है। हम समतापूर्ण, न्यायप्रिय और सुखमय विष्व का सपना देखते हैं। इसलिये भारत की विदेष नीति में फिलहाल किसी बदलाव की आवष्यकता नहीं है।[11]

समय व परिस्थिति के साथ बदलाव लाना जरूरी होता है और यह वह समय था जब भारतीय प्रधानमंत्री ने सारे दायित्व को अपनी क्षमताओं के बल पर विदेष नीति में बदलाव किया। जितनी बार वे विदेष गये है उन पर नेताओं ने विरोधाभाष प्रकट किया है। ये कहा जा सकता है कि **नरेन्द्र मोदी** के नेतृत्व में विदेष नीति के नये आयामों को स्थापित करने में सक्षम नजर आती है ये विदेष नीति से ज्यादा कुटनीति बन गई है।

जवाहर नेहरू युनिवर्सिटी में भारत–चीन रिष्तों के विषेषज्ञ स्वर्ण सिंह कहते हैं, ''जो रफ्तार है काम करने की प्रधानमंत्री मोदी का वो पहले के सभी प्रधानमंत्रीयों से अलग है। उनकी विदेष यात्राओं का जो सिलसिला है, उनकी जो फ्रीक्वेंसी है, लोगों से मिलने की कोषिष है और उनसे सीधे बात करने का जो तरीका है वो रफ्तार को बढ़ाया है।[12]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ीजजचरूध्धीपण्पापचमकपंण्वतहध्पापध
2. ीजजचरूध्ध्ूण्उमंण्हवअण्पदध्पद.विबने.तजपबसम.ीपणीजउध्24531ण
3. ीजजचेरूध्ध्ूण्बिमइववाण्बवउध्ळाथ्वत ।ससम्गंउपदंजपवदध्चवेजेण
4. ीजजचरूध्ध्ूण्उमंण्हवअण्पदध्पद.विबने.तजपबसम.ीपणीजउध्24216ध
5. अभिषेक तिवारी – करेंट अफेयर्स टूडे, दृष्टि पब्लिकेषन्स, 641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर दिल्ली, अंक 8, अक्टूम्बर, 2017, पृ.सं. 34–35।
6. ीजजचरूध्ध्ूण्अपतंरनदण्बवउध्दमू.350746ण
7. राजेश राजन – समसामयिकी महासागर,अरिहन्त पब्लिकेषन इण्डिया लिमिटेड, मेरठ, जनवरी, 2018, पृ.सं. 51।
8. ीजजचरूध्धीपदकपण्मइकनदपंण्बवउध्पदं.2015ध्बज.मेंज.चवसपबल.1151230000031णीजउसण
9. ीजजचरूध्धीपदकपण्मइकनदपंण्बवउध्बनततमदज.ीपितेण

10. ाजजचेरूध्धीपदकपण्दमॆ्18ण्बवउध्इसवहेध्उतपजलनदरंल.ानउंत.रींध्इवसह.्इवनज.पदकपंद.वितमपहद.चवसपबलण

11. ाजजचरूध्धूॅीवकीहंदहंण्पदसिपइदमजण्बण्पदण

12. ाजजचरूध्धूण्इइबण्बवउधीपदकपण